मार्च २०१८

कीमत ₹ २०

दादा भगवान परिवार का

# अक्रम एक्सप्रेस

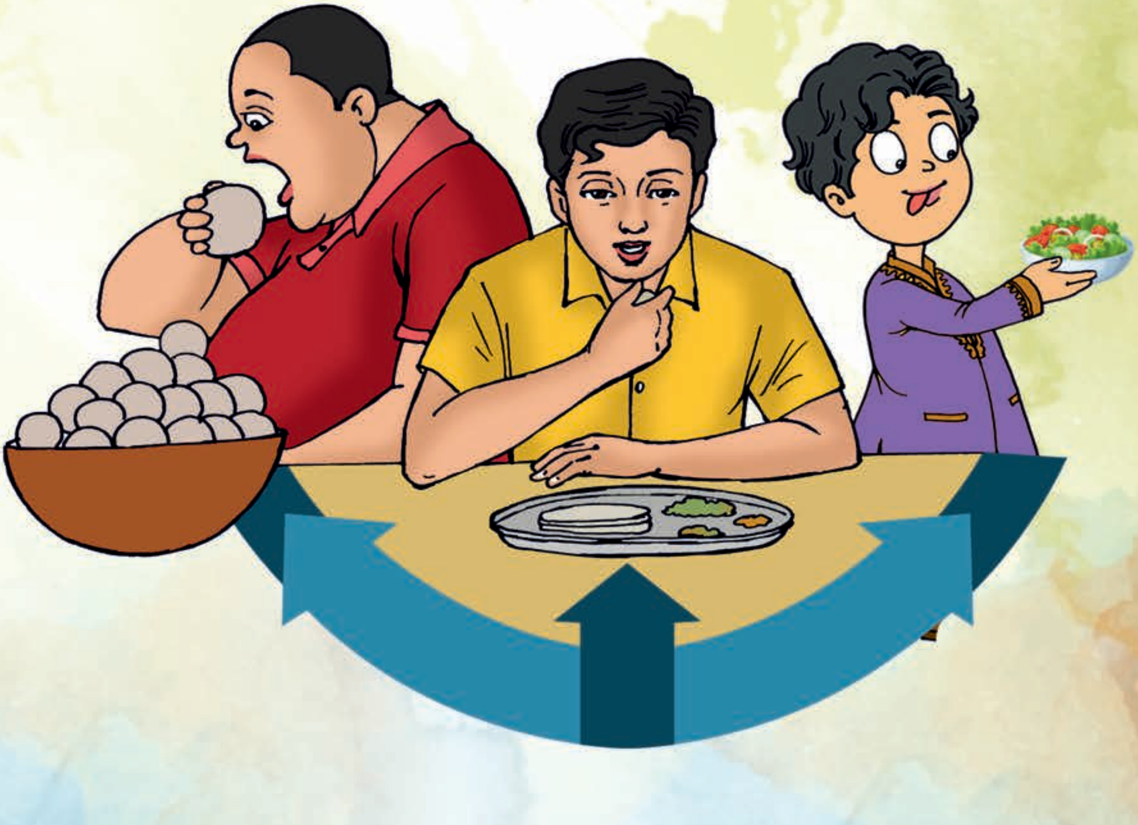

# नॉर्मालिटी

# नॉर्मेलिटी

## संपादकीय

बालमित्रों,

कई बार हमने अनुभव किया होगा कि पेट भरने के बाद भी हम पसंद की चीज़ें खाते ही रहते हैं और उसके फलस्वरूप हमारी तबियत बिगड़ जाती है। पूरे दिन बस टी.वी. ही देखते रहते हैं और आँखें दुःखने लगती हैं। जब कुछ करने का मन नहीं होता तो बस सोते ही रहते हैं। यदि कोई फ्रेन्ड आ जाए तो उसके साथ बातें ही करते रहते हैं और पढ़ाई रह जाती है।

यह सब क्या है? पता है, इसे क्या कहते हैं?

नहीं। तो इस अंक को पढ़ना चूक मत जाना।

जब कुछ भी लिमिट से ज्यादा या कम करने में आता है तो वह कितना योग्य है? उसका क्या परिणाम आता है? उसका अपने जीवन पर क्या असर पड़ता है? इस अंक में उसकी सुंदर समझ दी गई है। यह पढ़कर हम भी एब्नॉर्मेलिटी से बाहर निकलकर नॉर्मेलिटी में आ जाएँ ऐसी भावना...

-डिम्पल मेहता

**Printed & Published by**

**Dimple Mehta on behalf of**
**Mahavideh Foundation**
Simandhar City, Adalaj-382421.
Ta & Dist-Gandhinagar.

**Owned by**
**Mahavideh Foundation**
Simandhar City, Adalaj-382421.
Ta & Dist-Gandhinagar.

**Printed at**
**Amba Offset**
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

**Published at**
**Mahavideh Foundation**
Simandhar City, Adalaj-382421.
Ta & Dist-Gandhinagar.

संपादकः
डिम्पल मेहता
वर्ष : ५ अंकः १२
अखंड क्रमांकः ६०
मार्च २०१८

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फ़ोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :२०० रुपए
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१२ पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ८०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ५० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

# दादाजी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में नॉर्मेलिटी की क्या पहचान है?

दादाश्री : यदि सब कहते हों कि "तुम देर से उठते हो" तो क्या हमें नहीं समझ लेना चाहिए कि यह नॉर्मेलिटी नहीं है? तुम रात के ढ़ाई बजे उठकर घूमते रहो तो क्या सभी नहीं कहेंगे कि इतनी जल्दी क्यों उठ जाते हो? वह नॉर्मेलिटी नहीं है, ऐसा कहा जाएगा। "नॉर्मेलिटी" तो ऐसी चीज़ है कि सभी के साथ एडजस्ट हो जाती है।

खाने में भी "नॉर्मेलिटी" चाहिए। यदि पेट ज्यादा भर जाए तो नींद आती है। खाने-पीने की सभी बाबतों में हमारी "नॉर्मेलिटी" देखना। सोने-उठने की सभी बाबतों में हमारी "नॉर्मेलिटी" होती है। जब खाने बैठें और थाली में कोई पीछे से मिठाई रख दे तो हम उसमें से थोड़ा लेंगे, अनुपात बिगड़ने नहीं देते। हम जानते हैं कि यदि थाली में कुछ और आ गया है, तो सब्ज़ी निकाल देंगे। आपको इतना करने की ज़रूरत नहीं है।

यदि आप देर से उठते हो तो बोलते रहना कि "नॉर्मेलिटी" में नहीं रह पाते। अत: हमें तो सिर्फ अंदर ही टोकना है कि "जल्दी उठना चाहिए"। ऐसे टोकना फायदा करेगा। उसे ही पुरुषार्थ कहते हैं। यदि ज़बरदस्ती जल्दी उठने का प्रयत्न करोगे तो दिमाग बिगड़ जाएगा।

यदि कोई व्यक्ति ५५ वर्ष तक पढ़ता रहे, तो लोग क्या कहेंगे? अरे भाई, तुम पढ़ते ही रहोगे तो शादी कब करोगे? यह अबव नॉर्मल। यदि २ वर्ष के बच्चे की शादी कर दी जाए तो वह बिलो नॉर्मल।

हम १९४२ से कह रहे हैं कि २००५ में हिन्दुस्तान वर्ल्ड का केन्द्र बन गया होगा। अभी हो रहा है। फिर फॉरेन के लोग यहाँ पढ़ने आएँगे कि जीवन कैसे जीना चाहिए? नॉर्मेलिटी किसे कहते हैं? वे इतने अबव नॉर्मल हो गए हैं कि जीवन जीना ही नहीं आया। भौतिक सुख अपार बढ़ा दिए हैं। तो, बेचारे रात को नींद की गोलियाँ खाकर सोते हैं। अरे आप जहर खा रहे हो। इतना एक्सेस हो गया है कि नींद भी चली गई है। नींद तो कुदरत की बक्षीस है उसे भी खो दिया है। उसे जीवन कैसे कह सकते हैं? अरे, चंद्र तक पहुँच गए लेकिन उससे आपको क्या मिला? आपकी नींद की गोली लेना बंद हुआ?

जहाँ-जहाँ एक्सेस होता है वहाँ-वहाँ थकान लगती है। ज्यादा टी.वी. देखने से थकान लगती है। और ज्यादा खेलने से भी थकान लगती है।

# यह भी नई

“नॉर्मेलिटी” भगवान को पाने का मार्ग है। “नॉर्मेलिटी” से मोक्ष है। क्योंकि “नॉर्मेलिटी” से माता-पिता, टीचर्स, फ्रेन्ड्स... सभी हमसे खुश रहते हैं।

"नॉर्मेलिटी" क्या है? यह पसंद है ऐसा नहीं रहना चाहिए। और यह नापसंद है ऐसा भी नहीं रहना चाहिए। यदि मोबाइल में गेम खेलना बहुत अच्छा लगता है और पढ़ाई करना ज़रा भी अच्छा न लगे तो हम "नॉर्मेलिटी" में नहीं है ऐसा कहा जाएगा।

"कमी भी नहीं और ज्यादा भी नहीं" उसे नॉर्मेलिटी कहते हैं। "नॉर्मेलिटी" में ही संसार का सुख है। यदि आइस्क्रीम मिल जाए तो इतना खा लेते हैं कि फिर खाना बिल्कुल भी नहीं खाते, ऐसा नहीं होना चाहिए। यदि नॉर्मेलिटी से खाएँगे तो कभी बीमार नहीं पड़ेंगे।

# ही बात!

संसार में सुखी होने का एक ही रास्ता है "नॉर्मेलिटी"। व्हाट्सअप पर फ्रेन्ड्स के साथ चेटिंग करने में, टी.वी. देखने में, इन्टरनेट पर सर्फिंग करने में, खाने-पीने में, उठने-बैठने में, घूमने-फिरने में, काम-काज करने में, प्रत्येक चीज़ में "नॉर्मल" रहेंगे तो दुःख नहीं होगा।

# जस्ट पर्फेक्ट

झटके से ट्रेन स्टेशन पर रुक गई। पार्थ ने खिड़की से बाहर देखा। "वड़ापाऊ स्टॉल" का बॉर्ड पढ़कर उसका मन ललचाया। "लगता है कि ट्रेन इस स्टेशन पर पंद्रह मिनट रुकेगी।"

ध्रुव और शिवम को इशारा करके उसने कहा, "मैं अभी आ रहा हूँ।"

पार्थ के शब्द सुनकर शिवम् को बहुत अकुलाहट हुई। दो दिन पहले भी उसने पार्थ के वही शब्द सुने थे। उस रात का पूरा दृश्य फिर से उसकी आँखों के सामने ताज़ा हो गया।

"तूने कहा था कि अभी आ रहा हूँ और अभी टाइम देख! यहाँ मज़ाक-मस्ती करने के लिए आया है? लाइफ में कभी एन्जॉय नहीं किया? तुझे ज़िम्मेदारी का भान है या नहीं?" शिवम् ने पार्थ को डाँटते हुए कहा था।

ट्रेन की व्हिसल बजी और शिवम् वापस वर्तमान में आ गया। "पार्थ आया क्या..." शिवम् का वाक्य पूरा हो उससे पहले ही पार्थ वड़ापाऊ की तीन प्लेट लेकर कम्पार्टमेन्ट में चढ़ा।

एक प्लेट ध्रुव को दी, दूसरी प्लेट शिवम् के सामने रखी, "थोड़ा खा ले, शिवम्।"

"मुझे नहीं खाना", शिवम् ने मुँह फेर लिया।

सामने की सीट पर बैठे हुए तरुण भाई बड़ी देर से उन तीनों युवकों को देख रहे थे।

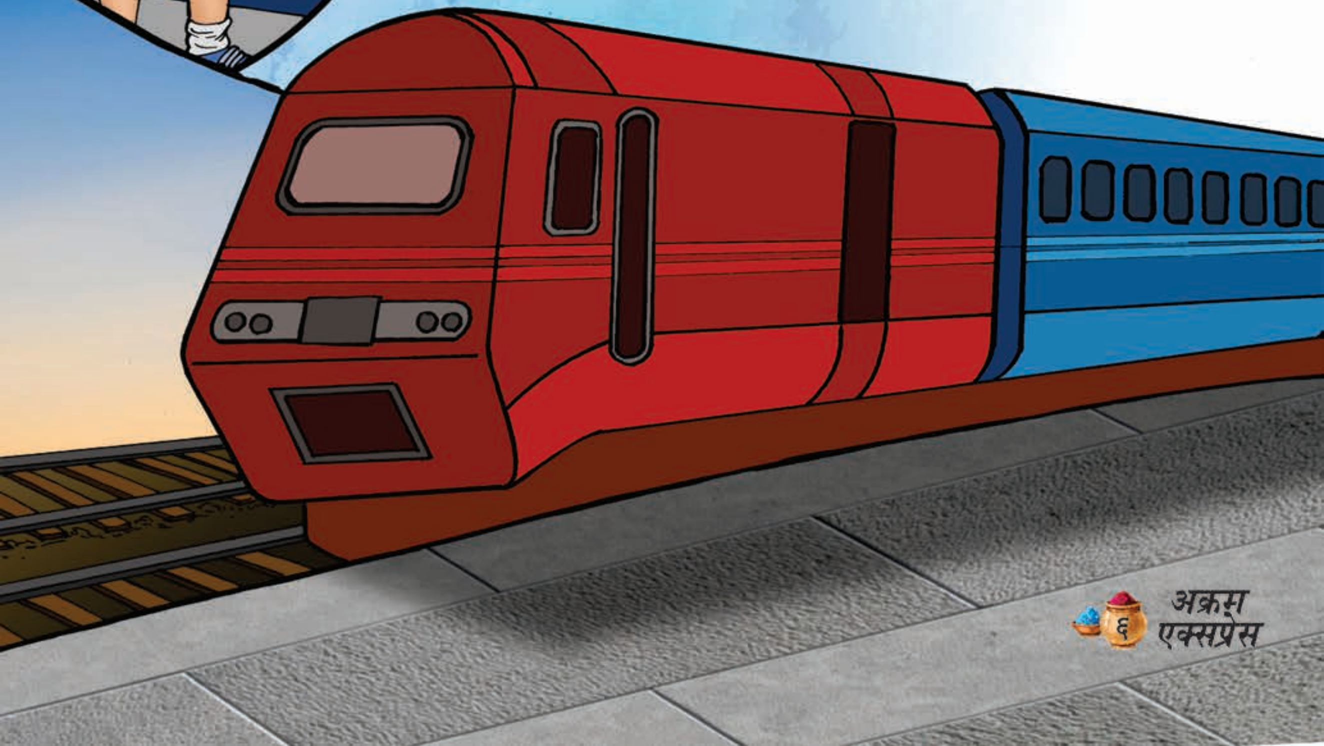

उनकी नज़र ध्रुव की वोटर बोटल पर पड़ी। बोटल पर "टेलेन्ट सर्च फेस्ट" का लोगों देखकर, उन्हें बात करने का मौका मिला, "क्या बात है! तुम लोगों ने "टेलेन्ट सर्च फेस्ट" में भाग लिया था?"

थोड़ी देर के लिए शांति छा गई। फिर धीरे से ध्रुव बोला, "हाँ, बस वहीं से वापस घर लौट रहे हैं।"

"वेरी नाइस। सालों पहले, मैंने भी अपने कॉलेज के फ्रेन्ड्स के साथ इस फेस्ट में भाग लिया था। आज तुम्हें देखकर मुझे हमारी ट्रिप याद आ गई। ओह बाय द वे, मेरा नाम तरुण है", तरुण भाई ने अपना परिचय दिया।

पार्थ, ध्रुव और शिवम् ने भी अपना-अपना परिचय दिया।

तरुण भाई ने अपने अनुभव की बात शुरू की, "उस फेस्ट में हम से बहुत बड़ी गड़बड़ हो गई थी। लेकिन जीवन का सब से महत्वपूर्ण पाठ भी उस फेस्ट के द्वारा ही मिला।"

पार्थ, ध्रुव और शिवम को तरुण भाई की बातें अच्छी लग रही थीं।

"ऐसी आशा के साथ हमारी पसंदगी हुई थी कि हम कॉलेज का नाम रोशन करेंगे। आज सोचता हूँ तो ऐसा लगता है कि क्या देखकर हमारी पसंदगी हुई होगी। हम तो नमूने थे। बिल्कुल बिना ठिकाने के। एक था लेट लतीफ और दूसरा बहुत ही जल्दबाज़। और मुझे तो जैसे समय का कुछ होश ही नहीं रहता था। इस तरह पहली बार घर से दूर, एक नए शहर कॉम्पीटिशन में भाग लेने जा रहे थे।"

तरुण भाई ने बीच में थोड़ा पॉज़ लिया।

शिवम ने पूछा, "फिर क्या हुआ?"

तरुण भाई ने बात आगे बढ़ाई, "ट्रेन में मैं और प्रणव मस्ती करते रहे, और सौरभ पूरी जर्नी में पढ़ता रहा। जब तक होटल पहुँचे तब तक तो हम तीनों थककर चूर हो गए थे। हम दोनों मस्ती करके और सौरभ पढ़ाई करके। होटल जाकर हमारे होश उड़ गए। हमें सुंदर से स्थान पर आलीशान होटल में रहने का चान्स पहली ही बार मिला था। सौरभ को तो सुंदर स्थान के शानदार होटल से कोई लेना-देना ही नहीं

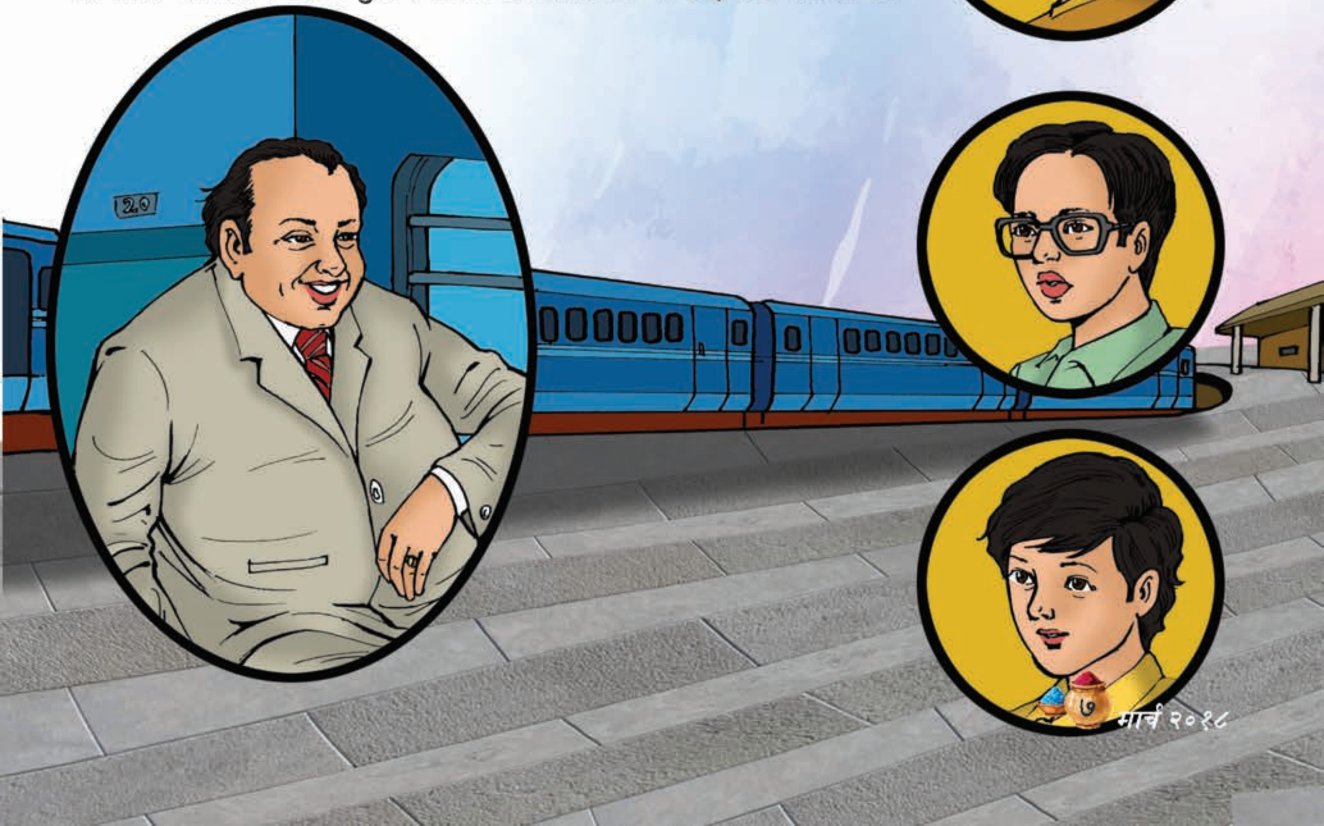

था। वह तो अपनी किताबें लेकर कोने में जाकर पढ़ने लगा। लेकिन प्रणव और मैं, ऐसे चान्स का लाभ लेने में ध्येय को भूल ही गए। आए थे कॉलेज का नाम रोशन करने के लिए, लेकिन रोशनी देखकर मज़ा करने में डूब गए। शाम तक ऐसे ही घूमते रहे। डिनर के बाद बहुत सारी आइस्क्रीम खा ली।"

तभी पार्थ को खाँसी आई और तरुण भाई रुक गए। पार्थ को लगा जैसे उसके अपने स्वभाव के बारे में ही तरुण भाई बता रहे हैं। एक क्षण के लिए तरुण भाई और पार्थ की नज़र मिली। पार्थ की आँखों में शर्म देखकर तरुण भाई समझ गए।

पार्थ ने पूछा, "फिर क्या हुआ?"

"बहुत सारी आइस्क्रीम खाने के बाद दूसरे दिन क्या हालत होगी? कॉम्पीटिशन के दिन मेरी नाक से गंगा-जमुना बह रही थी और प्रणव झोंके खा रहा था। सौरभ के प्रयत्न हमें तार नहीं पाए और हमारी टीम का टेरिबल पर्फोर्मेन्स रहा।" तरुण भाई की आवाज़ में अब गंभीरता आ गई थी, "हम बहुत ही भारी मन से कॉलेज वापस लौटे।"

सामने बैठे हुए तीनों युवकों की भी वही हालत थी। जैसे खुद का भविष्य अभी पता चल जाएगा, ऐसी उत्कंठा से ध्रुव ने पूछा, "आपके साथ कॉलेज में सभी का व्यवहार कैसा था?"

"एकदम शुष्क। जैसे कोई भयंकर भूल हो गई हो, ऐसा अनुभव कर रहे थे। एक लेक्चर के बाद हमारे हेड ऑफ द डिपार्टमेन्ट, सुभाष सर ने हमें अपनी केबिन में बुलाया।" तरुण भाई की आवाज़ में थोड़ी स्वस्थता आई और उस घटना का उन्होंने हूबहू वर्णन किया।

"क्यों बॉयज़", सुभाष सर ने कहा और घंटी बजाई, चपरासी से चार कप चाय मंगवाई। और हम तीनों सर झुकाकर बैठे हुए थे।

सुभाष सर ने एक छोटी कटोरी में से एक चम्मच चीनी चाय में डाली।

चम्मच से चाय हिलाते हुए, सुभाष सर ने पूछा, "सौरभ, यदि चाय में चीनी कम हो तो चाय कैसी लगेगी?"

सौरभ ने जवाब दिया, "फीकी, सर।"

सर ने मुझ से पूछा, "तरुण, और चीनी ज्यादा हो तो चाय टेस्टी लगेगी?"

मैंने कहा, "नहीं, सर।"

सर ने चाय का पहला घूँट लिया और बोले, "हम्म... पर्फेक्ट! मीठी नहीं और फीकी भी नहीं। जस्ट पर्फेक्ट।"

हमें सर का आशय समझ में नहीं आया। लेकिन किसी को कुछ पूछने की हिम्मत भी नहीं हुई।

सर चाय के कप को प्लेट में रखकर बोले, "एक दिन एक गुरु-शिष्य कहीं जा रहे थे। रास्ते में एक युवक ने गुरु से पूछा, "मैं अपने ध्येय तक कैसे पहूँचु?"

गुरु जी ने युवक का निरीक्षण करके कहा, "आनंद कर, साधना में ही चिपका मत रह।"

थोड़ी देर बाद दूसरा युवक आया और उसने भी गुरु जी से वही प्रश्न पूछा। दूसरे युवक का निरीक्षण करके, गुरु ने कहा, "साधना करने में मन लगाओ। आनंद करने में समय बरबाद मत करो।"

यह सुनकर उस शिष्य को आश्चर्य हुआ। उसने गुरु जी से कहा, "मुझे लगता है कि आनंद करना या नहीं, इसका आपको पूरा ख्याल नहीं है।"

गुरु जी ने जवाब दिया, "आध्यात्म का मार्ग खाई पर बंधा हुआ ऐसा पुल है, जिसकी कोई बाड नहीं है। यदि दाएँ या बाएँ किनारे पर पहुँच जाएँगे तो गिरने का डर रहेगा। इसलिए हे युवको, मैंने आप दोनों को मार्ग के बीच में आने का मार्गदर्शन दिया है।"

**"यदि किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करके सुखी होना है तो नॉर्मेलिटी में आना पड़ेगा।"**

सुभाष सर ने कहा, "यदि किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करके सुखी होना है तो नॉर्मेलिटी में आना पड़ेगा। ना ही बहुत दाई ओर, ना ही बहुत बाई ओर। नॉर्मल बनना पड़ेगा। आप तीनों के टेलेन्ट में कोई कमी नहीं है लेकिन नॉर्मेलिटी की खामी है। आज आप टेलेन्ट फेस्ट के खराब पर्फोर्मेन्स से दुःखी हैं। लेकिन यदि जीवन में सुखी होना है तो बेलेन्स करना सीखना पड़ेगा।"

और फिर सर ने अत्यंत गंभीरता से कहा, "उसे नॉर्मेलिटी नहीं कहते कि पूरे दिन पढ़ाई करते रहें या मौज-मस्ती में इतने डूब जाएँ कि ध्येय को ही भूल जाएँ। सभी बातों में बेलेन्स होना चाहिए।"

तरुण भाई ने कहा, "हमें एब्नॉर्मल होने की सज़ा मिल चुकी थी। और नॉर्मल रहने का पाठ हमारे हृदय में अंकित हो गया।" और फिर थोड़ा आगे झुककर, बहुत ही नरम होकर सामने बैठे हुए तीनों युवकों के सामने बारी-बारी से नज़र घुमाकर बोले, "जैसे यदि चाय में चीनी का प्रमाण थोड़ा कम-ज्यादा हो जाता है तो चाय का स्वाद बिगड़ जाता है, वैसे ही यदि मौज-मस्ती का प्रमाण भी बहुत बढ़ जाए या कम हो जाए तो जीवन का स्वाद बिगड़ जाता है।"

तभी कम्पार्टमेन्ट में "चाय गरम चाय", की आवाज़ सुनाई दी।

"एक-एक कप चाय हो जाए!", तरुण भाई ने चार कप चाय मंगवाई।

चाय का पहला घूँट पीकर, पार्थ बोला, "हम्म्म... जस्ट पर्फेक्ट"

और सभी एक-दूसरे के सामने देखकर हँस पड़े।

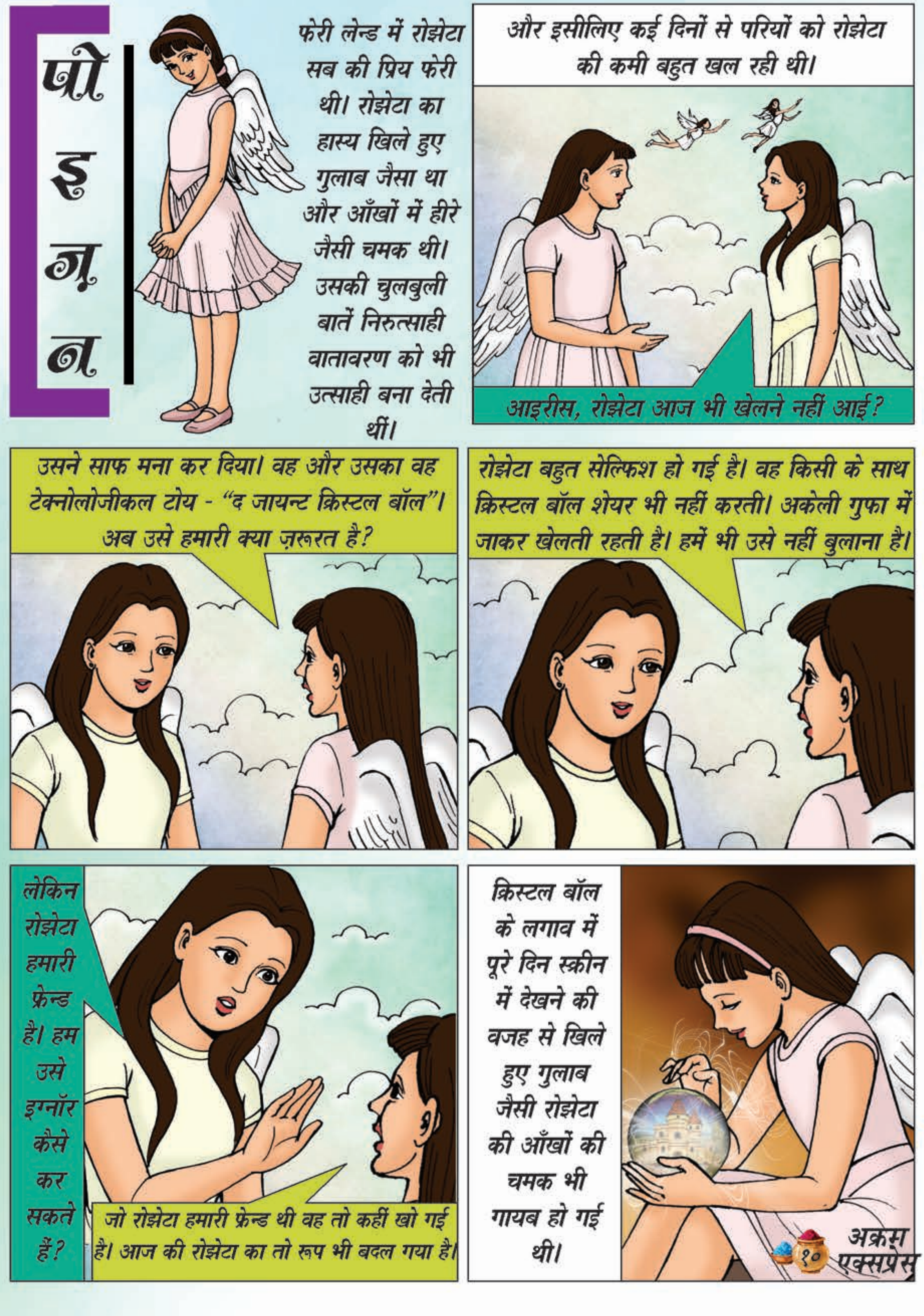
पॉ
इ
ज़
न
फेरी लेन्ड में रोझेटा सब की प्रिय फेरी थी। रोझेटा का हास्य खिले हुए गुलाब जैसा था और आँखों में हीरे जैसी चमक थी। उसकी चुलबुली बातें निरुत्साही वातावरण को भी उत्साही बना देती थीं।
और इसीलिए कई दिनों से परियों को रोझेटा की कमी बहुत खल रही थी।
आइरीस, रोझेटा आज भी खेलने नहीं आई?
उसने साफ मना कर दिया। वह और उसका वह टेक्नोलोजीकल टोय - "द जायन्ट क्रिस्टल बॉल"। अब उसे हमारी क्या ज़रूरत है?
रोझेटा बहुत सेल्फिश हो गई है। वह किसी के साथ क्रिस्टल बॉल शेयर भी नहीं करती। अकेली गुफा में जाकर खेलती रहती है। हमें भी उसे नहीं बुलाना है।
लेकिन रोझेटा हमारी फ्रेन्ड है। हम उसे इग्नॉर कैसे कर सकते हैं?
जो रोझेटा हमारी फ्रेन्ड थी वह तो कहीं खो गई है। आज की रोझेटा का तो रूप भी बदल गया है।
क्रिस्टल बॉल के लगाव में पूरे दिन स्क्रीन में देखने की वजह से खिले हुए गुलाब जैसी रोझेटा की आँखों की चमक भी गायब हो गई थी।
१०
अक्रम एक्सप्रेस

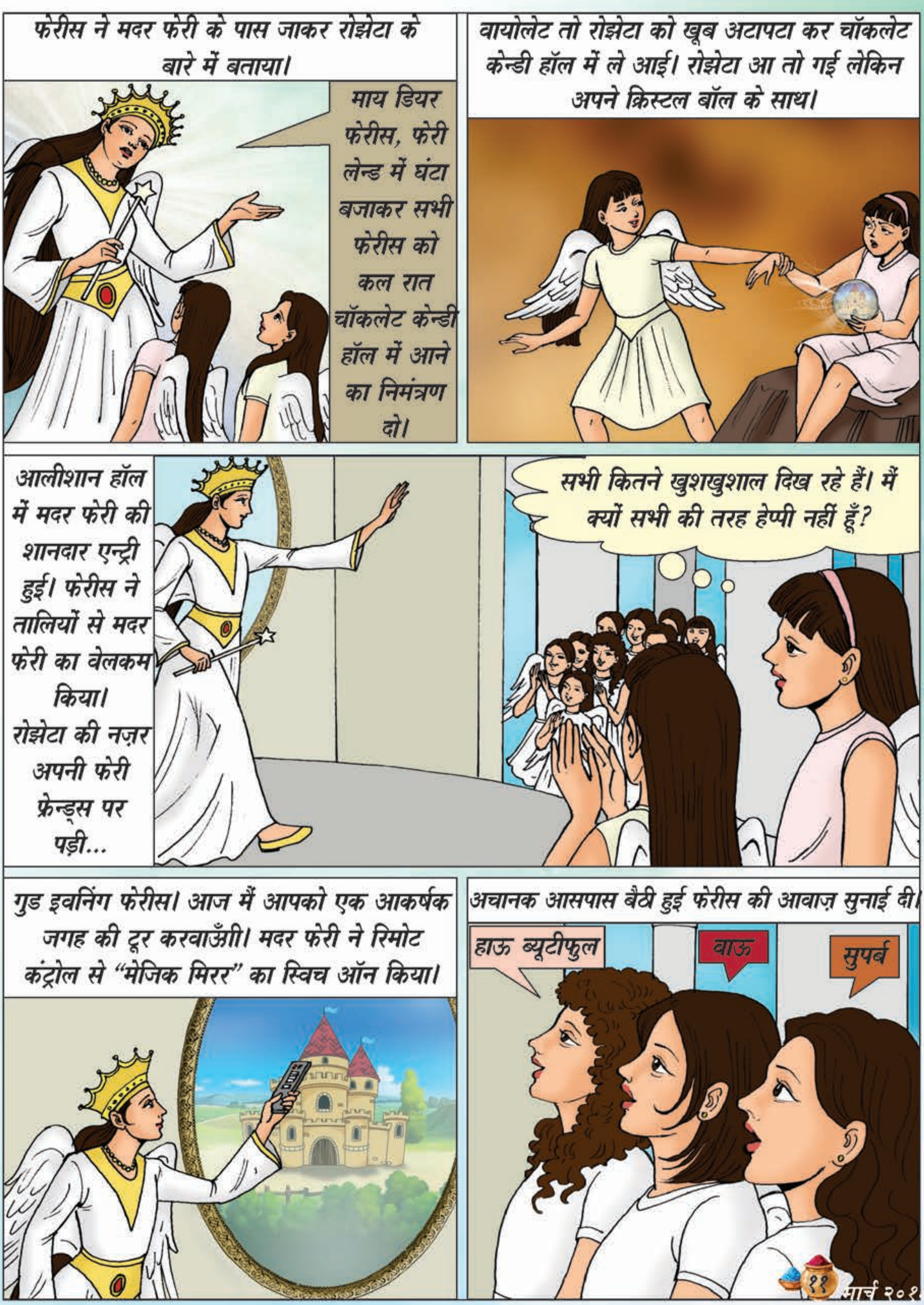
फेरीस ने मदर फेरी के पास जाकर रोझेटा के बारे में बताया।
माय डियर फेरीस, फेरी लेन्ड में घंटा बजाकर सभी फेरीस को कल रात चॉकलेट केन्डी हॉल में आने का निमंत्रण दो।
वायोलेट तो रोझेटा को खूब अटापटा कर चॉकलेट केन्डी हॉल में ले आई। रोझेटा आ तो गई लेकिन अपने क्रिस्टल बॉल के साथ।
आलीशान हॉल में मदर फेरी की शानदार एन्ट्री हुई। फेरीस ने तालियों से मदर फेरी का वेलकम किया। रोझेटा की नज़र अपनी फेरी फ्रेन्ड्स पर पड़ी...
सभी कितने खुशखुशाल दिख रहे हैं। मैं क्यों सभी की तरह हेप्पी नहीं हूँ?
गुड इवनिंग फेरीस। आज मैं आपको एक आकर्षक जगह की टूर करवाऊँगी। मदर फेरी ने रिमोट कंट्रोल से "मेजिक मिरर" का स्विच ऑन किया।
अचानक आसपास बैठी हुई फेरीस की आवाज़ सुनाई दी।
हाऊ ब्यूटीफुल
वाऊ
सुपर्ब

क्रिस्टल बॉल में तल्लीन रोझेटा ने मेजिक मिरर की स्क्रीन की ओर देखा। एक अत्यंत सुंदर जगह का नज़ारा देखकर उसकी आँखें फैल गईं।
इस जगह का नाम है - वन्डर लेन्ड। वन्डर लेन्ड की सुंदरता अवर्णनीय है। लेकिन इस मेजिकल जगह की एक खासियत यह है कि वहाँ से भाग्य से ही कोई जीवित वापस आ पाता है।
यह सुनकर परियों को झटका लगा।
इस वन्डर लेन्ड पर कुछ समय तक ही रहा जा सकता है। वहाँ ज्यादा समय रहना खतरे से भरा है।
जो भी वहाँ ज्यादा समय तक रहता है, उसके लिए वहाँ के वातावरण की हवा धीरे-धीरे ज़हरीली बनती जाती है। इस बात का पता होते हुए भी वहाँ की सुंदरता देखने में सभी इतने तल्लीन हो जाते हैं कि नॉर्मेलिटी भूलकर अपना जीवन खो देते हैं।

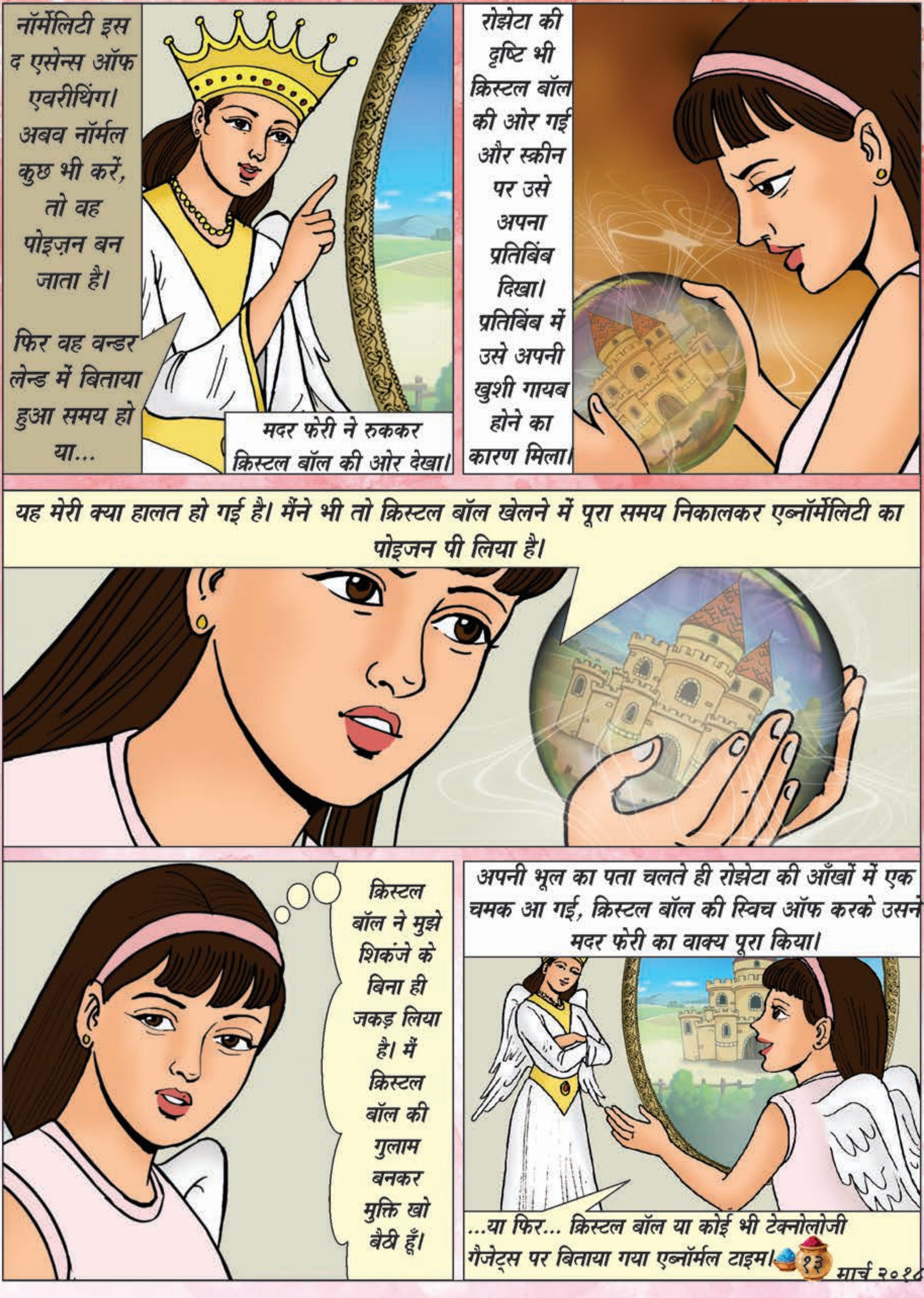

नॉर्मेलिटी इस द एसेन्स ऑफ एवरीथिंग। अबव नॉर्मल कुछ भी करें, तो वह पोइज़न बन जाता है।
फिर वह वन्डर लेन्ड में बिताया हुआ समय हो या...
मदर फेरी ने रुककर क्रिस्टल बॉल की ओर देखा।
रोझेटा की दृष्टि भी क्रिस्टल बॉल की ओर गई और स्क्रीन पर उसे अपना प्रतिबिंब दिखा। प्रतिबिंब में उसे अपनी खुशी गायब होने का कारण मिला।
यह मेरी क्या हालत हो गई है। मैंने भी तो क्रिस्टल बॉल खेलने में पूरा समय निकालकर एब्नॉर्मेलिटी का पोइज़न पी लिया है।
क्रिस्टल बॉल ने मुझे शिकंजे के बिना ही जकड़ लिया है। मैं क्रिस्टल बॉल की गुलाम बनकर मुक्ति खो बैठी हूँ।
अपनी भूल का पता चलते ही रोझेटा की आँखों में एक चमक आ गई, क्रिस्टल बॉल की स्विच ऑफ करके उसने मदर फेरी का वाक्य पूरा किया।
...या फिर... क्रिस्टल बॉल या कोई भी टेक्नोलोजी गैजेट्स पर बिताया गया एब्नॉर्मल टाइम।

# चलो खेलें...

१. नीचे दिए गए कप केक हर महीने बदलते हैं। केक १ अगस्त में बनी है, केक २ जून में और केक ३ मई महीने में। तो केक ४ कौन से महीने में बनी होगी?

## JJ 111

### हो जाओ तैयार आनंद लेने... उत्साह, रोमांच और मनोरंजन... सब कुछ एक साथ!

हेल्लो दोस्त! एक खास GNC पार्क, जो सिर्फ आपके लिए ही बनाने में आया है। यह पार्क नई मूवी शो, पपेट शो, आर्ट और क्राफ्ट की प्रवृत्तियाँ, नई चीज़ों की जानकारी देते डोम्स और ग्रुप गेम्स से भरपूर हैं। तो क्या आप इसका एक हिस्सा बनना चाहते हों? तो आइए और दादा की १११वीं जन्मजयंति मनाने इस साल जुड़कर कभी अनुभव न किए हो ऐसे मनोरंजन के सफर का हिस्सा बनो...

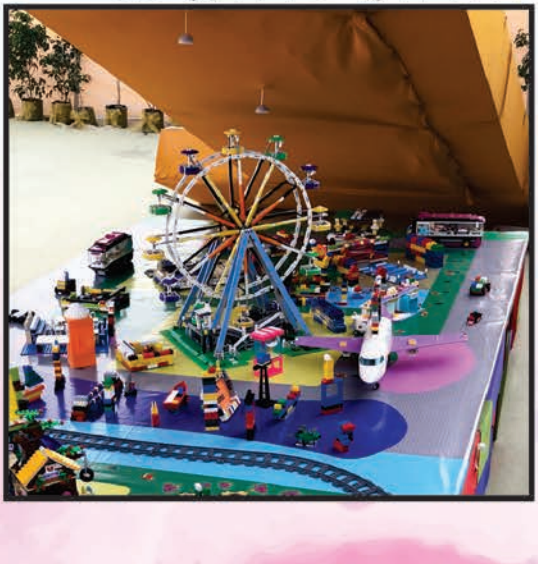

# पूज्यश्री के सानिध्य में मुंबई के बच्चों ने किया कल्चरल शो...

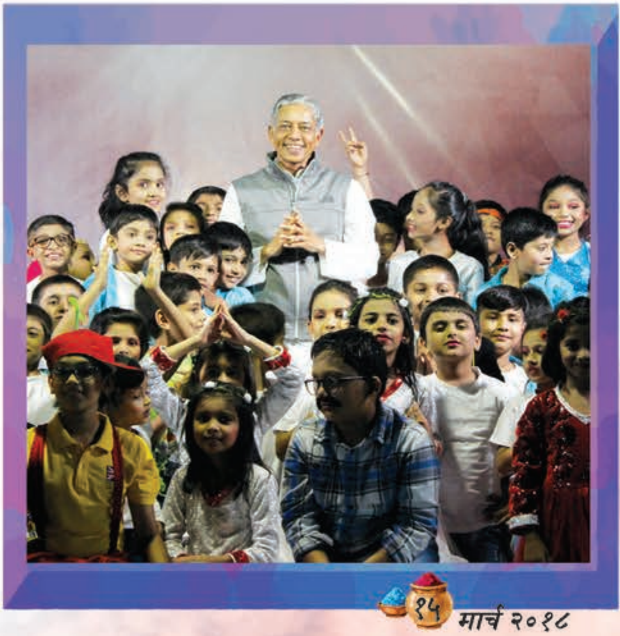

# ऐतिहासिक गौरवगाथा

कुमार नंदीसेन, राजगृही के महाराजा श्रेणिक के पुत्र थे। एक दिन भगवान महावीर, विचरण करते हुए राजगृही पधारे। राज्य में आनंद-आनंद छा गया। राज्य परिवार सहित सभी प्रभु की देशना सुनने गए। नंदीसेन भी साथ में गए। प्रभु की वाणी सुनते-सुनते उन्हें वैराग्य का भाव जागृत हो गया और वहीं उन्होंने दीक्षा लेकर साधु जीवन स्वीकार करने का निर्णय कर लिया।

देशना पूरी होने के बाद नंदीसेन प्रभु के पास गए। उन्हें वंदन किया और खुद को दीक्षा देने की विनती की। भगवान महावीर तो त्रिकाल ज्ञानी थे। सभी का सब कुछ देख-जान सकते थे। भगवान महावीर ने नंदीसेन से दीक्षा के लिए जल्दी नहीं करने और थोड़ा समय रुक जाने के लिए कहा। वे नंदीसेन के भविष्य को देख सकते थे कि अभी उसके गहराई से बंधे हुए सांसारिक कर्म भोगने बाकी हैं। उसका हिसाब चुकता किए बिना उनकी दीक्षा सफल नहीं होगी।

नंदीसेन दीक्षा लेने के लिए कृतनिश्चयी थे। उन्होंने हठपूर्वक दीक्षा ले ही ली और संयमी साधु जीवन का पालन करने लगे। उन्हें भगवान की वाणी से यह पता चल गया था कि उनके संयमी जीवन में तकलीफ आने वाली है, इसलिए वे हमेशा सावधान रहते और कठोरता से संयम का पालन करते थे। उनके संयमी जीवन में कहीं से कोई दोष प्रवेश न कर जाए उसके लिए वे बहुत सजग रहते थे। लेकिन उनका बाँधा हुआ भोगावली कर्म इतना गहरा था कि वह अपना प्रभाव बताए बिना नहीं रहा।

एक दिन नित्य क्रम के अनुसार वे भिक्षाटन के लिए निकले लेकिन कर्म का उदयकाल आ गया था इसलिए नज़दीक में उन्हें कहीं से भिक्षा नहीं मिली। इसलिए वे नगर के पास के समृद्ध दिखने वाले घरों की ओर गए। वैभवी दिखने वाले एक घर के दरवाज़े पास खड़े होकर उन्होंने बुलंद आवाज़ में "धर्मलाभ" की घोषणा की। बाहर खड़े चौकीदार के लिए इस प्रकार के साधु का आगमन असामान्य था, इसलिए क्या प्रतिभाव दिया जाए, उसकी उसे उलझन थी। साधु ने हवेली के चबूतरे पर चढ़कर फिर से "धर्मलाभ" कहा।

कुछ समझ में नहीं आने की वजह से चौकीदार ने अंदर जाकर द्वार पर खड़े हुए साधु के बारे में जानकारी दी। अंदर से एक रूपांगना सुंदर स्त्री बाहर आई।

उसने द्वार पर खड़े हुए साधु से ज़रा हँसकर कहा, "यहाँ तो "धर्मलाभ" लेने वाला कोई नहीं है। इस द्वार पर तो "धनलाभ" कहने वाले का स्वागत होता है।"

सुंदर स्त्री के व्यंग से आहत होकर साधु ने गुस्से में कहा, "तुम्हें कितना धन चाहिए? तुम लेते-लेते थक जाओगी मैं उतने धन की वर्षा कर सकता हूँ।"

ऐसा कहकर साधु ने आँगन में पड़े हुए एक तिनके को हाथ में लेकर जैसे ही उसके दो टुकड़े किए वैसे ही आँगन में करोड़ो सोने की मोहरों का ढेर लग गया। धन की वर्षा से चकित हुई उस रूपांगना को साधु और उसका मिजाज़ दोनों भा गए।

उसने साधु को तीक्ष्ण नज़रों से देखते हुए कहा, "मैं अकेली इतना धन कैसे खर्च कर सकती हूँ? उसका उपयोग करने के लिए आप मेरे साथ शादी कर लीजिए।" और उसने झुककर साधु से घर में पधारने की विनती की।

नंदीसेन उस सुंदर स्त्री पर मोहित हो गए। वे उसके पीछे-पीछे उसके घर के अंदर पहुँच गए।

उस रूपांगना ने उन्हें बैठने के लिए आसन दिया और सामने पेय रखा। तभी साधु के मन में कुछ चमक हुई कि वे कहाँ और कितने आगे आ गए हैं।

क्षणभर के लिए उन्हें भगवान की वाणी याद आई लेकिन वह उन्हें वापस लौटा नहीं पाई। फिर भी उनमें धर्म के संस्कार बहुत गहरे थे, इसलिए उन्होंने तय करते हुए कहा, "मैं यहाँ रुकूँगा और तुम्हारी इच्छा का पालन करूँगा। लेकिन मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं रोज़ दस लोगों को धर्म प्राप्त करवाने के बाद ही भोजन करूँगा।"

अंत में नंदीसेन अपने गहरे भोगावली कर्म के अधीन होकर वहीं रह गए। इस तरह १२ साल बीत गए। वे रोज़ दस लोगों को धर्म प्राप्त करवाने के बाद भोजन करते।

एक दिन ऐसा आया कि उस दिन नौ लोगों ने धर्म प्राप्त किया लेकिन दसवाँ व्यक्ति किसी तरह

मान ही नहीं रहा था। नंदीसेन भिन्न-भिन्न तरह से उसे धर्म की बात समझा रहे थे लेकिन वह माना ही नहीं।

खाना खाने का समय खत्म हो रहा था। रूपांगना भोजन का थाल परोसकर बैठी हुई थी। थोड़ी-थोड़ी देर में वह नंदीसेन को बुला रही थी। नंदीसेन हर बार कह देते कि, "यह दसवाँ व्यक्ति धर्म प्राप्त कर ले फिर मैं आता हूँ।"

अंत में इंतज़ार करती हुई रूपांगना ने व्यंग करते हुए कहा, "यदि वह नहीं मानता तो अंत में आप ही धर्म प्राप्त कर लीजिए तो दस हो जाएँगे।"

रूपांगना के शब्दों से जैसे नंदीसेन का आत्मा आलस छोड़कर जाग गया।

उन्होंने कहा, "तुम्हारी बात सही है। आज मैं दसवाँ। अब मेरा भोगावली कर्म पूरा होता है। मुझे आगे का मार्ग दिख रहा है। अब मैं यहाँ नहीं रुक सकता।"

और नंदीसेन वहाँ से निकलकर भगवान महावीर के पास पहुँच गए। उन्होंने फिर से चरित्र ग्रहण किया। किए हुए गुनाह का प्रायश्चित करके उत्कृष्ट ढंग से धर्म करने लगे। अनेकों को धर्म प्राप्त करवाकर अंत में जीवन पूरा होने के बाद वे देवलोक में सिधारे।

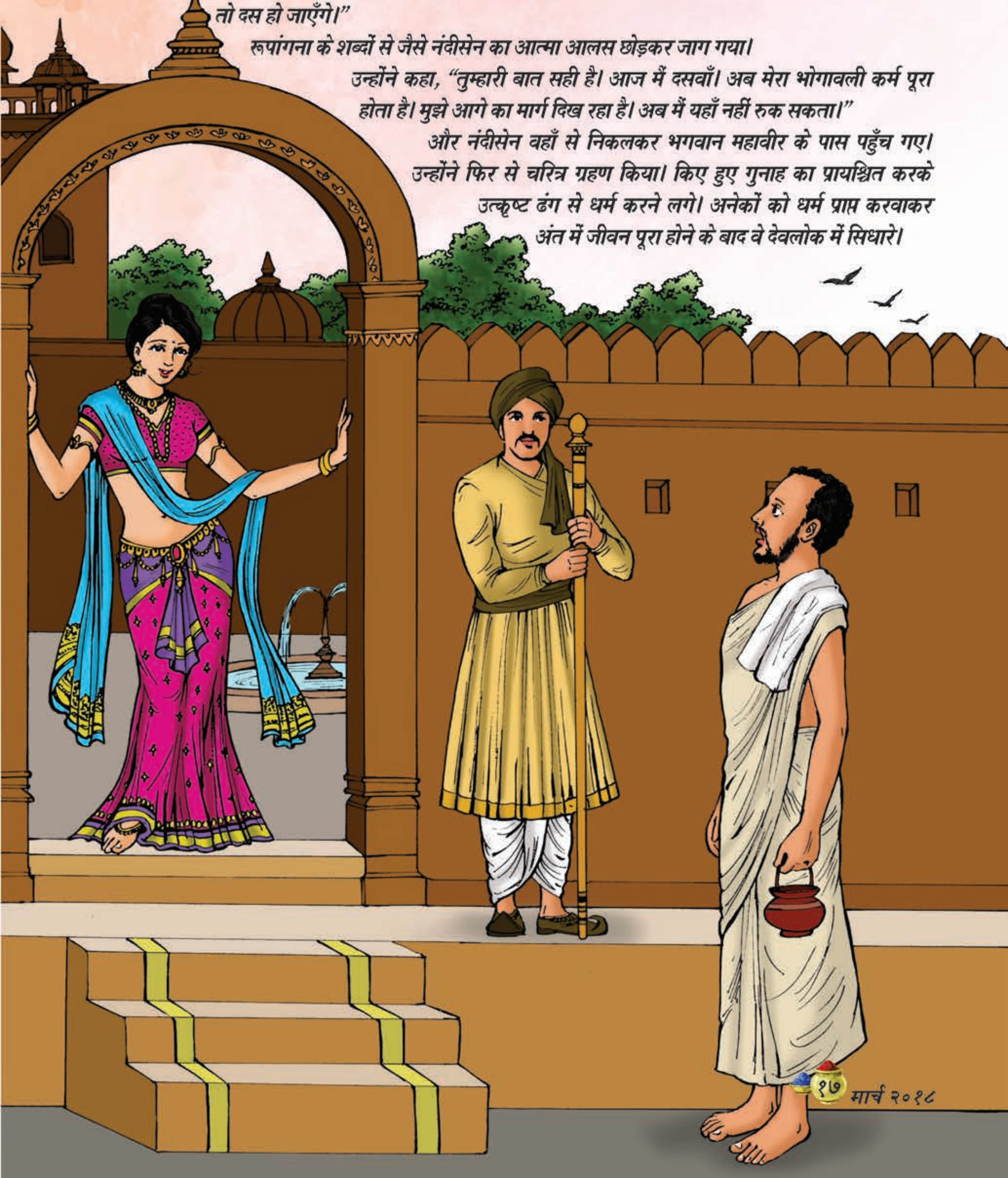

# मीठी यादें

इ.स. २००२ की बात है। एक ब्रह्मचारी भाई नीरू माँ के साथ पहली बार वीडियो की सेवा में बाहरगाँव गए। वहाँ उन्हें सेन्टर का कैमरा ओपरेट करना था। उन्होंने सत्संग हॉल में जाकर कैमरा फिट कर दिया। नीरू माँ अभी आए नहीं थे। इसलिए वे अन्य भाई के साथ गप्पे मारने लगे। और अचानक ज़ोर से धड़ाम की आवाज़ आई।

देखा तो कैमरा नीचे गिरा हुआ था और उसका लेन्स टूट गया था। एक छोटा बच्चा खेल रहा था। वह दौड़ता-दौड़ता उस कैमरे के स्टेन्ड से टकराया और कैमरा गिर गया। वह हाई रेन्ज का महँगा कैमरा खास नीरू माँ के लिए था। सभी डरने लगे कि अब क्या होगा? हम नीरू माँ से कैसे कहेंगे कि मैंने नहीं गिराया। उस भाई ने तुरंत ही वहाँ दूसरा कैमरा लगा दिया। दूसरा कैमरा छोटा था।

थोड़ी देर बाद नीरू माँ आए। उन्होंने तुरंत देख लिया कि कैमरा छोटा है। सभी टेन्शन में थे। सत्संग पूरा होने के बाद दूसरे भाई ने नीरू माँ को बता दिया कि ऐसा-ऐसा हुआ है।

सुनते ही नीरू माँ बोले, "अरे पगले, इसके लिए डरने की क्या ज़रूरत है? कैमरा ही टूटा है न। और कुछ थोड़े ही टूटा है? चल तू आइस्क्रीम मंगा। उस कैमरे पर कौन था?"

जब वह भाई सामने आए तब नीरू माँ ने कहा, "चल तू ही सभी को आइस्क्रीम दे।"

और एक ही सेकन्ड में वातावरण हल्का हो गया। सभी को जो डर था वह गायब हो गया। और इस तरह पूरा डर निकल गया। सभी को ऐसा डर लग रहा था कि मानो हंटर मारने वाले हैं उसके बजाय जैसे फूलों की बरसात हुई हो ऐसा सेलीब्रेशन किया।

*और तब सभी को ऐसा लगा कि, सचमुच ऐसी मैया की तो किसी के साथ बराबरी नहीं की जा सकती।*

# हा...हा...ही...ही...

शिक्षक : अगर बिजली की खोज नहीं हुई होती तो क्या होता?

विद्यार्थी : सर, मोमबत्ती जला कर टी.वी. देखना पड़ता!

एक बार बापु वजेसंग का मोबाइल बिगड़ गया। तो वे दुकान पर रिपेयर करवाने गए।

दुकानदार : सेमसंग का है?

बापु : वजेसंग का है।

मगन अपने दोस्त का नंबर मोबाइल में सेव कर रहा था। बापु विक्रमसिंह देख रहे थे।

बापु विक्रमसिंह : ओए... क्या कर रहा है?

मगन : सेव कर रहा हूँ।

बापु विक्रमसिंह : ढ़ाई सौ ग्राम मेरे लिए भी कर देना।

नेता : ये सब लोग फूटबॉल को इतनी लातें क्यों मारते हैं?

दूसरा नेता : गोल करने के लिए।

नेता : अरे लेकिन ये बॉल पहले से इतना गोल तो है... और कितना गोल करेंगे?

Information on 'Akram Express' Monthly Magazine - Form 4 (Rule No. 8)
1. Place of Publication: Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
2. Periodicity of its Publication: Monthly
3. Printers Name: Amba Offset Nationality: Indian
Address: B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025
4. Publisher's Name: Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation Nationality: Indian
Address: Simandhar City, Adalaj – 382421, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
5. Editor's Name: Dimple Mehta Nationality: Indian Address: Same as above
6. Name of Owner: Mahavideh Foundation Nationality: Indian Address: Same as above
I, Dimple Mehta hereby declare that the above stated information is correct to my knowledge and belief.
Date: 08-03-2018, Ahmedabad Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
(Signature of Publisher)

## पज़ल के जवाब

१) ४वीं अप्रैल

Akram Express
March 2018
Year : 5, Issue : 12
Conti. Issue No.: 60

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
LPWP Licence No. PMG/HQ/081/2018
valid up to 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

# और अंत में...

निरंजनदास ने अपने घर भोजन का आयोजन किया। अचानक उन्हें ख्याल आया कि घर में नमक खत्म हो गया है। उन्होंने अपने बेटे को बुलाकर कहा, "बेटा, गाँव में से थोड़ा नमक ले आ। और ध्यान रखना कि तू नमक की सही कीमत चुकाना, बहुत ज्यादा नहीं और बहुत कम भी नहीं।"

यह सुनकर बेटे को उलझन हुई। "पिताजी, ज्यादा कीमत नहीं चुकानी चाहिए यह तो समझ में आया लेकिन कम कीमत क्यों नहीं चुकानी है? कम कीमत चुकाऊँगा, तो थोड़े पैसों की बचत होगी न?"

पिताजी ने कहा, "नहीं बेटा। ऐसा करने से, हमारे जैसा छोटा सा गाँव धीरे-धीरे नष्ट हो जाएगा।"

यह सुनकर वहाँ बैठे हुए मेहमानों को बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने निरंजनदास से इस बात का कारण पूछा।

निरंजनदास ने कहा, "जिस व्यक्ति के पास पैसे की बहुत कमी होती है वही व्यक्ति ऐसे कम कीमत में चीज़ बेचता है। यदि हम कम कीमत चुकता करेंगे तो हमने उस व्यक्ति की परिस्थिति का गैरफायदा उठाया ऐसा कहा जाएगा।"

मेहमान ने पूछा, "लेकिन इतनी छोटी सी बात पूरे गाँव को कैसे नष्ट कर सकती है?"

"शुरुआत में ऐसी बात छोटी लगती है। लेकिन यदि प्रत्येक व्यक्ति ऐसी बात को छोटी और गैरज़रूरी समझेगा, तो फिर अंत में क्या परिणाम आएगा? यदि किसी भी बात में प्रमाण नहीं रखेंगे, तो अंत में मुश्किलें ही आएँगी।"

देखा मित्रों, सभी बातों में नॉर्मेलिटी रखना कितना ज़रूरी है? कीमत चुकाने में भी नॉर्मेलिटी रखना महत्वपूर्ण है।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २. पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025 and published